

प्राचीन शिक्षा विकास



भारत में शिक्षा का इतिहास

प्राचीन भारत में शिक्षा

"हम उन भारतीयों के प्रति आभार प्रकट करते हैं जिन्होंने हमें गिनना सिखाया, जिसके बिना कोई सार्थक वैज्ञानिक खोज नहीं की जा सकती थी" - अल्बर्ट आइंस्टीन

भारत में शिक्षा को निम्नलिखित कालों में विभाजित किया जा सकता है: -

वैदिक काल (1000 ईसा पूर्व- 600 ईसा पूर्व)

बौद्ध काल (600 ईसा पूर्व- 1200 ईस्वी)

मध्यकाल (1100 ईस्वी सन् - 1800 ईस्वी)

स्वतंत्रता से पूर्व का भारत / ब्रिटिश भारत (1857 - 1947)

स्वतंत्रता के बाद का भारत (1947 के बाद)

प्राचीन शिक्षा प्रणाली की विशेषता



प्राचीन भारत में शिक्षा नश्वरता से अमरता और अराजकता से आध्यात्मिकता तक का सफर थी! शिक्षा प्रणाली अत्यंत विस्तृत और अनूठी थी और पूर्णतया विशिष्ट दिखाई देती थी, भारत सांस्कृतिक विविधता से समृद्ध था और विभिन्न समृद्ध संस्थान वेद और कुछ बौद्ध ग्रंथों में मिलते हैं।

वेदों की उत्पत्ति का पता आर्यों के आगमन से लगाया जा सकता है जिन्होंने संभवतः हिंदूकुश पर्वतों को पार किया और लगभग 1500 -1000 ईसा पूर्व में उत्तरी भाग में बस गए। वेदों का मूल अर्थ "ज्ञान" है। इसमें चार वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, सामवेद), छह वेदांग (निरुक्त, व्याकरण, छंद, कल्प, ज्ञान और ज्योतिष), 108 उपनिषद् और दर्शन शास्त्र (न्याय, योग, मीमांसा, वेदांत, वैशेषिक, सांख्य), पुराण, भगवद् गीता आदि शामिल हैं।

शिक्षण का माध्यम संस्कृत था और ज्ञान मौखिक रूप से केवल 'गुरुकुल' नामक स्थानों में प्रदान किया गया था जो पूर्ण रूप से शिक्षण का आवासिक स्वरूप था और विद्यार्थियों को गुरु के स्थान पर रहना पड़ता था।

ज्ञान को दो मुख्य वर्ग में विभाजित किया गया था: -

1. **पराविद्या:** उच्च ज्ञान और आध्यात्मिक पांडित्य
 2. **अपराविद्या:** निम्न ज्ञान और सांसारिक विज्ञान।
- वैदिक शिक्षा ने शब्दों की ध्वनि 'पद' और 'चिंतन' के माध्यम से प्रदान की गई विशुद्ध मौखिक शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया। विद्यार्थियों को उनके नैतिक चरित्र और श्रेष्ठ आचरण के आधार पर प्रवेश दिया गया था। नियमों में समाज का अधिक प्रभाव नहीं था और विद्यार्थियों से लिए जाने वाले शुल्क को 'गुरु दक्षिणा' कहा जाता था।
 - **उपनयन** (दीक्षा) नामक एक संस्कार किया गया था, और जब वे पांच वर्ष की आयु के हो जाते थे, तो **विद्यारंभ** संस्कार से औपचारिक शिक्षा आरंभ होती थी।
 - उपनयन एक ऐसा संस्कार था जिसमें बच्चा अपने गुरुओं के आवास पर पुनर्जन्म लेता है, जिसे "द्विज जन्म" कहा जाता है। यह संस्कार आठ से बारह वर्षों के बीच पूरा किया जाता था जिसके बाद छात्र को "ब्रह्मचारी" कहा जाता था।
 - इसके बाद उत्सर्जन समारोह होता है, मेधा ज्ञान **समावर्तन** (दीक्षांत समारोह) के साथ समाप्त होता है।
 - जीवन के व्यावहारिक पहलू का भी ध्यान रखा गया था "कर्म" के सिद्धांत उच्च स्थान पर थे। कला, साहित्य और दर्शनशास्त्र के विद्यार्थियों को कृषि और अन्य आजीविकाओं में काम करने का ज्ञान मिला।
 - शिक्षण का मुख्य उद्देश्य केवल भौतिकतावादी होने के बजाय आत्मनिर्भर, बौद्धिक और आध्यात्मिक होना था। उनका उद्देश्य शिक्षा और धर्म के माध्यम से निर्वाण या "मोक्ष" प्राप्त करना था।
 - महिला शिक्षा की भी उपेक्षा नहीं की गई, और उन्हें वेद और वेदांगों (सीमित) की शिक्षा दी गई। उन्हें ऋषिका कहा जाता था।
 - **शिक्षित महिलाओं के दो वर्ग थे: -**
 1. **सद्योद्वहास:** जिन महिलाओं ने अपने विवाह तक पढ़ाई की
 2. **ब्रह्मवादिनी:** - जिन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए विवाह का त्याग किया।
 - शिक्षक ने महत्वपूर्ण दर्जा प्राप्त किया, और वह गुरुकुल में माता-पिता का स्थानापन्न व्यक्ति था। वह एक सुधारक, मार्गदर्शक, नैतिक शिक्षक, चरित्र निर्माता, एक आध्यात्मिक पिता और एक प्रेरक था।



प्राचीन शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य

1. **मोक्ष का अंतिम साधन:** - प्राचीन भारतीय लोग मोक्ष प्राप्ति को अंतिम उद्देश्य और सर्वशक्तिमान ईश्वर से मिलन के रूप में मानते थे। उनका मानना था कि शिष्य जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्त हो सकता है।
2. **चरित्र निर्माण:** - उच्चतम रूपों की मान्यताएं जैसे कि बड़ों का सम्मान, ईमानदारी, सच्चाई आदि शिक्षा के मुख्य उद्देश्य थे।
3. **धार्मिक ज्ञान का समर्थन करना:** - शिक्षा का एक नैतिक पक्ष था, ताकि शिष्य में आध्यात्मिकता का संचार हो सके।
4. **सामाजिक कर्तव्यों पर बल:** - विद्यार्थी को एक पिता, पुत्र, भाई और पति की भूमिकाएं निभाना सिखाया गया। उसे अपने नागरिक कर्तव्यों के लिए भी जिम्मेदार होना चाहिए।
5. **सर्वांगीण व्यक्तित्व का विकास:** - शिक्षण केवल व्यावहारिक और नैतिक पहलुओं तक सीमित नहीं था, विद्यार्थियों को आत्मविश्वास, आत्म-नियंत्रण और आत्मनिर्भरता के संदर्भ में अपने संपूर्ण व्यक्तित्व को विकसित करने के लिए प्रशिक्षित किया गया था।
6. **समृद्ध संस्कृति का संरक्षण और प्रचार:** - प्राचीन शिक्षा प्रणाली संस्कृति के संरक्षण और इसे भावी पीढ़ियों के लिए संरक्षित करने पर केंद्रित है।

उपदेश की पद्धतियां

शिक्षा तीन सरल तरीकों से प्रदान की गई: -

- **श्रवण:** - यह शिक्षक के मुख से निकलने वाले शब्दों को सुनने की प्रक्रिया है।
- **मनन:** - यह शिष्य को अपने लिए सोचने और स्वयं से शिक्षण का मूल्यांकन करने योग्य बनाता है। इसे शिक्षण का अन्तरावलोकन और आत्मसात्करण कहा जाता है।
- **निदिध्यासन:** - यह सत्य को समझने और इसे वास्तविक दुनिया में लागू करने के लिए है।
- **श्रुतियां:** - ज्ञान को व्यावहारिक रूप से श्रुतियां कहा जाता था।

शिक्षा का आश्रम संबंधी क्रम

जाति व्यवस्था उत्तर वैदिक काल में सामने आई और पूर्व वैदिक काल में यह अस्तित्व में नहीं थी। इसके तहत, ज्ञान प्रदान करने की निम्नलिखित व्यवस्थाएं थीं: -

ब्राह्मणों को धर्म, दर्शन और पुजारी गतिविधियों से संबंधित अन्य विषयों के बारे में ज्ञान दिया गया था। आयु सीमा पांच से सोलह वर्ष तक की थी।

क्षत्रियों को युद्ध के पहलुओं का प्रशिक्षण दिया गया था। उनके लिए आयु की सीमा 6 से 22 वर्ष के बीच थी।

वैश्य के व्यापार वर्ग को उनके व्यापार के बारे में सिखाया गया था, और ज्ञान प्राप्त करने की आयु 8 से 24 वर्ष के बीच थी।

निम्न जाति, **शूद्र** को कोई ज्ञान नहीं दिया गया था।

मूल्यांकन प्रणाली

इस विषय में कोई महत्वपूर्ण विचार नहीं है कि आचार्य अपने शिष्यों के ज्ञान का मूल्यांकन कैसे करते थे, लेकिन यास्क और सायण के अनुसार जो ऋग्वेद के प्रसिद्ध टीकाकार थे, उन्होंने श्लोकों से निम्न निष्कर्ष प्राप्त किए: -

महाप्रज्ञान स्तर: उच्चतम योग्यता के विद्यार्थी

मध्यमप्रज्ञान स्तर: मध्यम योग्यता के विद्यार्थी

अल्पप्रज्ञान स्तर: निम्न योग्यता के विद्यार्थी

प्राचीन काल में पाठ्यक्रम

- मानवशास्त्र
- ज्योतिष
- अर्थशास्त्र
- ज्ञानमीमांसा
- भूगर्भशास्त्र
- जीव पारिस्थितिकी
- मानव सुजननिकी
- अंक शास्त्र
- सैन्य शास्त्र

शिक्षा सरल फिर भी अनेक प्रकार से लाभप्रद और बहुआयामी थी, विद्यार्थियों ने जीने की कला सीखी और समग्र रूप से अपने व्यक्तित्व का विकास किया।

History of Education in India

Education in Ancient India

"We owe a lot to Indians who taught us how to count without which no worthwhile scientific discovery could have been made" - Albert Einstein

Education in India could be divided into the following periods:-

Vedic Period (1000 BC- 600 BC)

Buddhist period (600 BC- 1200 AD)

Medieval Period (1100 AD - 1800 AD)

Pre-Independence India/British India (1857 - 1947)

Post -Independence India (Post 1947)

Characteristics of Ancient Education System



Education in Ancient India was the journey from mortality to immortality and also from chaos to the spirituality! The education system was very elaborated and unique and stood out quite prominently, India being rich in cultural diversity and varied rich institutions comes from Vedas and few texts from the Buddhist sect.

The origin of Vedas could be traced back to the advent of the Aryans who supposedly crossed the Hindukush mountains and settled in the northern part around 1500 -1000 BC. Vedas essentially means "knowledge". It consists of four **Vedas** (Rig, yajur, Atharva, Sama Veda), *four Vedangas* (phonetics, grammar, metrics, ritualistic

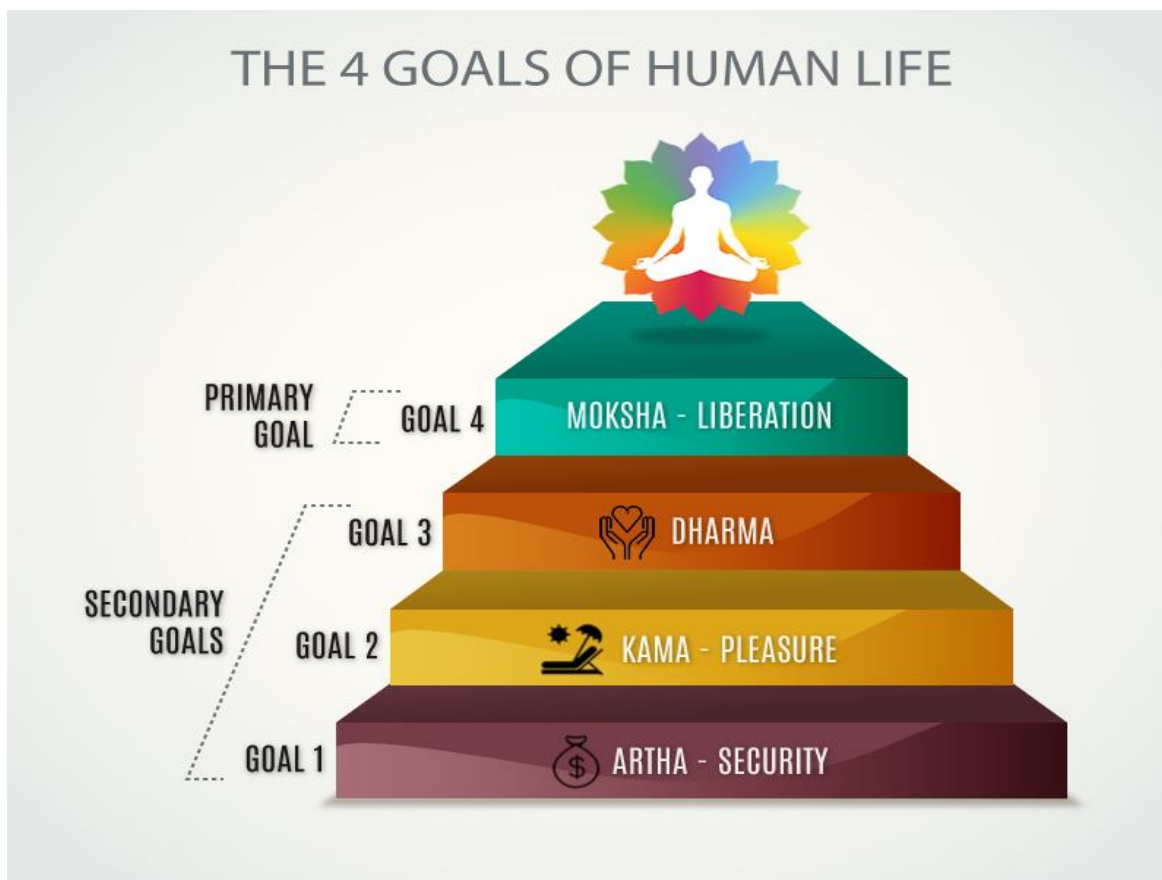
knowledge and astronomy), one hundred eighty **Upanishads** and **Darshan shastras**(Nyaya, Yoga, Mimamsa, Vedantsa, Vaisheshika, Sankhya) , Puranas, Bhagwat Gita etc.

The medium of teaching was Sanskrit and the knowledge was passed on orally in a system called "**Gurukuls**" which was purely residential from of teaching and students have to live at the Guru' place.

The knowledge was divided into two broad streams:-

1. **The Paravidya**: higher knowledge and spiritual wisdom
 2. **The Aparavidya**: The lower knowledge and the secular sciences.
- The Vedic teaching paid a lot of attention to the sound of words "padas" and pure oral education given through "**Chintan**," i.e. thinking. The students were admitted based on their moral character and high conduct. The society didn't have a much say in the regulations and fees to be charged called "**Guru-Dakshina**".
 - A ceremony called **Upanayana** (initiation) was conducted, and when they reach the age of five, formal education will start with the ceremony of **Vidyarambha**.
 - Upanayana was a ceremony by which the child is called to be born again at his gurus' home, called the "**dvijya born**". The ceremony was conducted between eight to twelve years post which the student is called "**Brahmacharin**".
 - It was followed by **Utsarjan** ceremony, Medha Jnana culminating with **Samavartana** (Convocation address).
 - The practical aspect of life was also taken care also the doctrine of "Karma" held a high pedestal. The students of art, literature, and philosophy got the working knowledge in agriculture and other vocations of life.
 - The main aim of teaching was self -fulfilment, intellectual and spiritual, rather than just the materialistic aim. Their objective was to attain salvation or "**moksha**" through education and religion.
 - Women Education was also not neglected, and they were taught the Vedas and Vedangas (limited). They were called **Rishikas**.

- There were two classes of educated women: -
 1. **Sadyodwahas:** Women who studied till their marriage
 2. **Brahmavadinis:-** Who renunciate marriage altogether to pursue higher studies.
- The Teacher occupied the pivotal position, and he was the replacement of parents at the gurukul. He was a reformer, guide, moral educator, character builder, a spiritual father and an inspirer.



The Aim of the Ancient Education System

1. **The ultimate objective of Moksha:** - Ancient Indians believed in the attainment of liberation as the ultimate aim and the union with almighty. The pupil could be free from the cycle of birth and death.
2. **Character Shaping:** - The values of highest forms like respect to elders, honesty, truthfulness, respecting elders etc. were the main aim of education.
3. **Imparting religious knowledge:** - The Education had an ethical side to it so the spirituality could be infested in the pupil.

4. **Stress on Social duties:** - The student was taught to be playing the roles of a father, son, brother and husband. He must be responsible for his civic duties too.
5. **Development of all-round personality:** - Teaching was not limited to the practical and moral aspects, the students were trained to develop their overall personality in terms of self-confidence, self-control and self-reliance.
6. **Preservation and promotion of rich culture:** - The ancient education system focussed on preserving the culture and protecting it for the future generations.

Methods Of Instructions

Education was imparted through three simple ways of :-

- **Shravana:** - It is the process of listening the words coming from the mouth of The Teacher.
- **Manana** :- It makes pupil to think for himself and evaluate the teaching by himself. It is called self-introspection and assimilation of the teaching.
- **Nididhyasana:** - It is comprehension the truth and applying it to the real world.
- **Srutis:-** Knowledge was practically called as Srutis.

Monastic Orders Of Education

The caste system emerged in the later Vedic period and didn't exist in Pre- Vedic times. Under this, the following were the system of imparting knowledge: -

Brahmins were imparted knowledge about religion, philosophy and other subject matters related to priestly activities. The age limit varied from five to sixteen years.

The Kshatriyas were trained in aspects of warfare. The age for them ranged between six and twenty- two.

The business class of **Vaishya** were taught about their trade, and age to gain the knowledge was eight and twenty-four.

The lower caste in the hierarchy, **Shudra** was not given any knowledge.

Evaluation System

There has been no significant ideas about how the acharya used to evaluate the learning levels of their pupils, but as per Yaskas and sayanas who were famous commentators on Rig Veda concluded from the hymns these:-

Maha Prazanan Grade: Students of the highest ability

Madhyam prazanan Grade: Students of mediocre ability

Alpa Prazanan Grade: Students of low ability.

Curriculum In Ancient Times

- Anthropology
- Astronomy
- Economics
- Epistemology
- Geology
- Ethnology
- Human eugenics
- Mathematics
- Military science

The education was simple yet fruitful and multi-faceted in many ways, the students learned the art of living and holistically developed their personality.